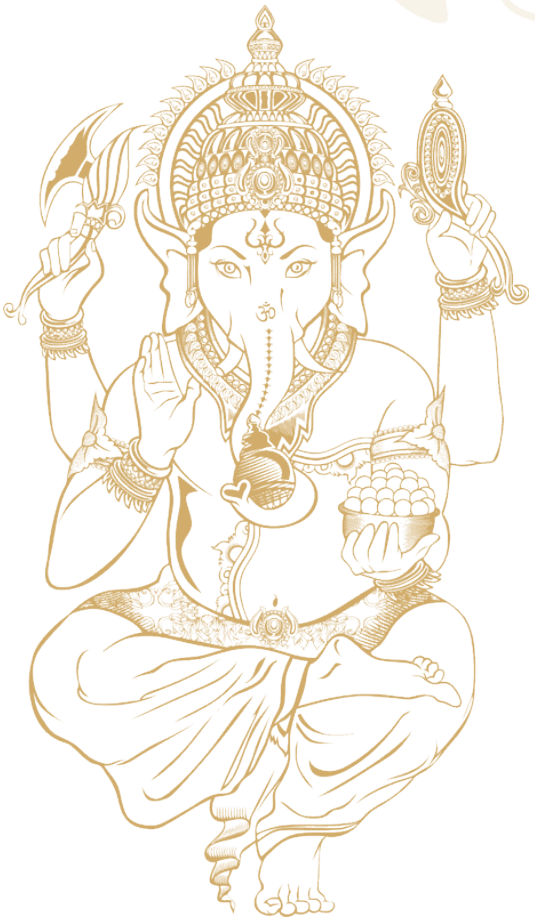

Mr.Prabhat

15 Dec 1984

04:10 PM

Deoria

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119567901**

तिथि 15/12/1984 **समय** 16:10:00 **वार** शनिवार **स्थान** Deoria **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:38:35
अक्षांश 26:31:00 उत्तर **रेखांश** 83:48:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:05:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:52:18 घं
वेलान्तर	00:04:48 घं
सूर्योदय	06:35:32 घं
सूर्यास्त	17:04:32 घं
चैत्रादि संवत	2041
शक संवत	1906
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	8
नक्षत्र	उ०फाल्गुनी
योग	आयुष्मान
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टे-टेकचंद
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

सूर्य 5वर्ष 7मा 29दि
गुरु
15/08/2025
15/08/2041

गुरु	03/10/2027
शनि	15/04/2030
बुध	21/07/2032
केतु	27/06/2033
शुक्र	26/02/2036
सूर्य	14/12/2036
चन्द्र	15/04/2038
मंगल	22/03/2039
राहु	15/08/2041

योगिनी

सिद्धा 6वर्ष 7मा 9दि
सिद्धा
25/07/2020
26/07/2027

सिद्धा	04/12/2021
संकटा	26/06/2023
मंगला	05/09/2023
पिंगला	25/01/2024
धान्या	25/08/2024
भ्रामरी	05/06/2025
भद्रिका	26/05/2026
उल्का	26/07/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:41:22	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			00:00:17	धनु	मूल	1	केतु	केतु	मित्र राशि	1.25	कलत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			27:24:44	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि	1.10	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			28:50:45	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	शनि	उच्च राशि	1.32	अमात्य	भ्रातृ	विपत
बुध	व	अ	27:59:06	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	सम राशि	1.08	भ्रातृ	ज्ञाति	वध
गुरु			24:02:15	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	बुध	स्वराशि	0.92	पुत्र	धन	अतिमित्र
शुक्र			13:44:17	मक	श्रवण	2	चंद्र	राहु	मित्र राशि	1.22	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि			29:23:34	तुला	विशाखा	3	गुरु	सूर्य	उच्च राशि	1.72	आत्मा	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		03:30:43	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		03:30:43	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	मित्र राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

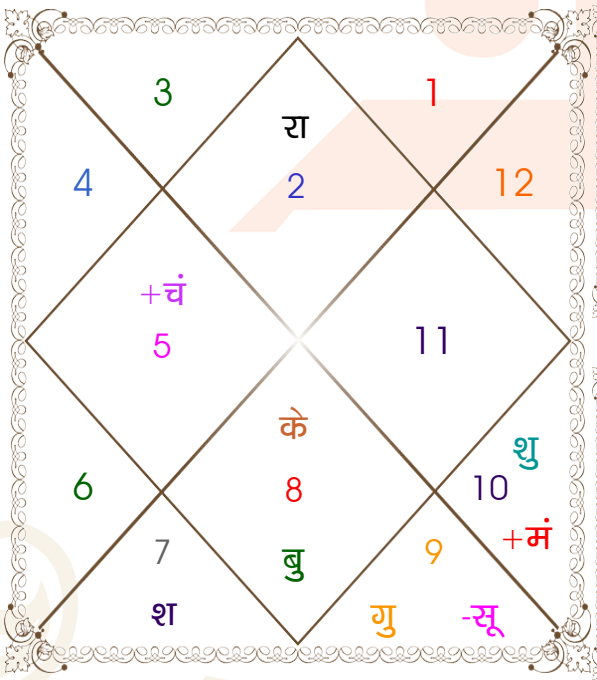

चन्द्र कुंडली

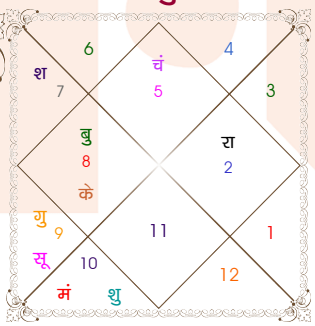

नवमांश कुंडली

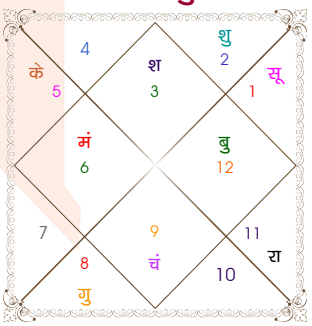

सर्वाष्टकवर्ग

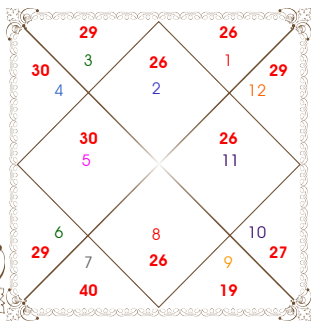

दशमांश कुंडली

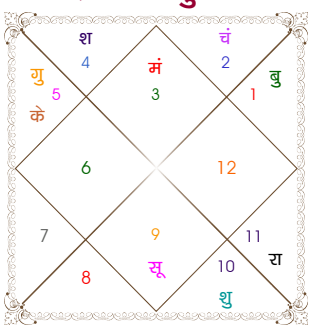

नक्षत्रफल

आपका जन्म उतरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, योनि गौ, नाड़ी आद्य, गण मनुष्य तथा वर्ग श्वान होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "टे" होगा।

आपके मन में दया तथा दानशीलता का भाव स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार आप दीन दुःखियो तथा जरूरतमन्द लोगों के प्रति इस भावना को प्रदर्शित करते रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा आपका आचरण अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। साथ ही अपने अच्छे आचरण स्वभाव तथा कार्यों के द्वारा आप समाज से पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आप राज्य में या क्षेत्र में किसी उच्च पद पर भी सुशोभित हो सकेंगे। आपका स्वभाव कोमल होगा तथा सबके साथ आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आप एक धैर्यशाली पुरूष भी होंगे तथा धैर्यपूर्वक अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

आप जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखो का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। साथ ही समाज से पूर्ण मान सम्मान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आप अन्य जनों के द्वारा किये गए उपकार को मानने वाले होंगे तथा उनके प्रति अपनी पूर्ण कृतज्ञता के भाव को प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त आप श्रेष्ठ विद्वान के गुणों से भी पूर्ण रूप से युक्त रहेंगे।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज में सभी वर्गो के लोगों को आप अपनी सेवाओं तथा अच्छे कार्यों से प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा उन सबके प्रिय रहेंगे। साथ ही आप अपनी स्वर्जित विद्या के द्वारा धनार्जन करके जीविकोपार्जन करेंगे एवं समस्त सुखों के उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

सहनशीलता के गुण से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे तथा वीरता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रिय होगी जो अन्य जनों को रूचिकर लगेगी। साथ ही आप निशाने बाजी की कला में भी निपुण होंगे। आप एक महान योद्धा भी होंगे तथा जन सामान्य से आपका प्रिय व्यवहार रहेगा।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

इन्द्रियों का दमन करने अर्थात् संयम रखने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे तथा आपका स्वभाव भी अत्यन्त शान्त होगा। सभी लोग आपसे लगाव प्रदर्शित करेंगे तथा समाज में आप एक बुद्धिमान पुरूष के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेज होगा। आपकी

आखें छोटी तथा पीले रंग की होगी। वनों तथा पर्वतों में भ्रमण करने का आपको अत्यन्त शौक रहेगा तथा मांस भक्षण करना आपको रूचिकर लगेगा। सन्तति में आपके पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में ही रहेगी। आप शीघ्र ही बिना किसी कारण के ही क्रोधित होने वाले व्यक्ति भी होंगे तथा अभिमान का भाव भी आपके अर्न्तमन में व्याप्त रहेगा जिस का आप यदा कदा प्रदर्शन करते रहेंगे। आप अपने जीवन में तृष्णाओं से भी व्याकुल रहेंगे तथा समय समय पर इनसे आपको कष्टानुभूति होती रहेगी। आपकी प्रवृति दानशील होगी एवं अवसरानुसार आप दीन दुःखियो तथा जरूरतमन्द लोगों को दान देते रहेंगे। आप एक पराक्रमी तथा स्थिर बुद्धि से युक्त पुरूष होंगे तथा आपके समस्त कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरूजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां अत्यन्त ही पुष्ट होंगी तथा उग्रता के भाव से अधिकांश युक्त रहेंगे। किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले आप अवश्य ही कोई न कोई ध्वनि मुंह से निकालेंगे। आप विशाल तथा आकर्षक वक्षस्थल के स्वामी होंगे तथा अपने पराक्रम से समाज में अपने प्रभुत्व को पूर्ण रूप से स्थापित करने में सफल रहेंगे। आप चारों तरफ गम्भीरता से निरीक्षण करने के बाद ही सन्तुष्ट होकर किसी भी कार्य को आरम्भ करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताऽतीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आप का मुखमंडल भी विशाल एवं विस्तृत रहेगा तथा स्वभाव में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा जिसका आप समाज में प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही माता के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप उदरभरण योग्य जीविकार्जन से पूर्ण सन्तुष्टि अनुभव करने वाले होंगे तथा मांस के प्रति आप में लोलुपता के भाव की प्रबलता रहेगी साथ ही पर्वतों की गहन गुफाओं में भ्रमण करने में आप हमेशा उत्सुक रहेंगे। आप सेवक तथा बन्धुवर्ग से युक्त रहेंगे।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।

कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही क्षमाशीलता के गुण से सुशोभित रहेंगे तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करना ही श्रेयस्कर समझेंगे। आप अपने समय को व्यर्थ में नष्ट नहीं करेंगे तथा सदैव अपने कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे। आपका अधिकाँश समय यात्राओं तथा भ्रमण में व्यतीत होगा तथा शीत से आप अत्यधिक भय का अनुभव करेंगे। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान होंगे। समाज में अन्य जनों से आपका व्यवहार विनयशील रहेगा तथा माता पिता का आपके प्रति विशेष अनुराग रहेगा। इसके अतिरिक्त आप कई बुरी आदतों से भी युक्त रहेंगे फिर भी संसार में पूर्ण ख्याति को प्राप्त करेंगे।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपके नेत्र तथा शरीर की बनावट अत्यन्त ही मनोहर एवं आकर्षक रहेगी तथा गम्भीरता से अवलोकन करने की प्रवृति से आप युक्त होंगे तथा अपने सम्पूर्ण जीवन को विभिन्न प्रकार के सुखों से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप देवता तथा ब्राहमणों के प्रिय भक्त होंगे इनके प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा व्याप्त रहेगी तथा समय समय पर इनकी पूजार्चना करते रहेंगे। आपका हृदय दया की भावना से भी युक्त रहेगा तथा बल का भी आप में कदापि अभाव नहीं रहेगा। साथ ही आप विभन्न कलाओं के विषय में जानकारी रखने वाले व्यक्ति होंगे। आप तीव्रबुद्धि के स्वामी भी होंगे तथा आपकी शारीरिक कान्ति अति दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप बहुत से लोगों को आश्रय तथा सुख प्रदान करने वाले पराक्रमी पुरूष भी होंगे।

आप समाज में पूर्ण मान तथा सम्मान की प्राप्ति करेंगे तथा धन से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आखें भी विशालता से युक्त रहेंगी तथा निशानेबाजी में आप अत्यन्त दक्ष एवं चतुर होंगे। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण तथा नगर वासियों को वश में करने में आप पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय

प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्री वर्ग के अत्यन्त प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। आपका मन हमेशा उत्साह से परिपूर्ण रहेगा तथा अपने जीवन के समस्त कार्यकलापों को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही वाद विवाद करने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी चतुराई से सभी जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे।

आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी सचेत रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य भगवान को प्रातः काल अर्ध्य प्रदान करना चाहिए तथा रविवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गेहूं, गुङ इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य सुपात्र से कम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।